"Dissemination of Education for Knowledge, Science and Culture."
– Shikshanmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe

Proceeding of One Day State Level Seminar

On

"AQAR and Academic and Administrative Audit in Revised Assessment and Accreditation Framework"

Organized by

Shri. Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

Dattajirao Kadam Arts, Science and Commerce College, Ichalkaranji.

Tal: Hatkanangale, Dist: Kolhapur. 416 115

Sponsored by

National Assessment and Accreditation Council, Bengluru

Dr. Milind Hujare
Principal

Dr. V. V. Ganbavle, Editor

Members

Dr. A. S. Tapase Dr. Atish N. Patil Mr. Akshay Swami

Friday, 28th December 2018

Scanned by CamScanner

INDEX

Sr. No.	Research Paper	Name of the Author	Page No.
1	**Key note address and Planery Talk I** Role of Assessment and Accreditation towards improving Quality of Education	Prof. Parag Shaha	1 – 4
2	**Planery Talk II** Quantitative Metrics of the New NAAC QIF/SSR (July 2018 edition)	Prin. Dr. H. V Deshpande	5– 6
3	**Planery Talk III** Academic Auditing: Aspects to consider	Prof. Peeyush Pahade	7 – 10
4	Academic and administrative Auidt: A Measure of Quality Enhancement in Higher Education	Prin. V.R. Chavan Dr. S. P.Patil	11
5	Role of Internal Quality Assurance Cell in College Development	A. N. Chougule	12 – 14
6	Role of National Assessment and Accreditation in higher Education	Vaishali Mane	15 – 18
7	Role of IQAC in Quality Higher Education	S. S. Amrutsagar	19 – 24
8	E – Content: Virtual Way of Teaching & Learning	Amit A. Gurav	25 – 28
9	Academic and Administrative Audits of IQAC: Need in Quality Maintenance	S. P. Patil	29 – 31
10	Lab to land "A Best practice by P.G. Department of Botany Dattajirao Kadam Arts, Science and Commerce College, Ichalkaranji."	V. A. Patil, M. Y. Shinde	32 – 35
11	Role of Higher Education in development of Country: a review	N. H. Shaikh	36 – 42
12	Students Mentoring Scheme	A. N. Patil, C. R. Patil	43 – 47
13	भारत में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ	D. R. Tupe	48 – 53
14	Student Assessment in Indian Education System: A Need of Revolutionary Change	S. S. Ankushrao	54 – 57
15	The Role of IQAC to enhance ICT based learning	K. B. Chougule	58 – 61
16	An overview on Digital Education	S. A. Jamadar, V. S. Wandre	62 – 68
17	Role of NAAC in Higher Education	S. I. Noorani, U. A. Patil	69 – 70
18	21st Centuray Education, Teacher and Learner	F. M.Mulla, R. A. Sanadi, P. K. Waghmare	71 – 75
19	Digital Resources in Higher Education	Prin A. N Patil, S. K. Indi	76 – 81
20	"Study of Higher Education in India-An Overview"	D. B. Sathe	82 – 89
21	"Study of Higher Education in India"	P. P. Mali	90 – 94
22	The Role of Academic and Administrative Audit panel in performing assessments effectively	S. H. Ambavade	95 - 100
23	Role Of Ict To Enrich Quality In Teaching Learning And Evaluation	Dr. Prashantkumar Kamble	101 – 105
24	"Digital Education"	R. D. Niduni	106 – 110

Scanned by CamScanner

भारत में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ

D. R. Tupe,
Vivekanand College (Autonomous),
Kolhapur, Maharashtra (India)-416003.

प्रस्तावना (Introducation) :

शिक्षा ज्ञान की द्योतक है। ज्ञान विद्या से जन्म लेता है और मानव की कलुषता को मिटाकर उसके भीतर श्रेष्ठता का सृजन करता है। व्यक्ति विभिन्न स्रोतों से अनुभव प्राप्त कर अपने व्यवहारों को परिमार्जित करता है। अनुभवों का यह परिमार्जन ही शिक्षा है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो हमारे जीवन को एक नयी विचारधारा, नया सवेरा देती है, हमें एक परिपक्व समाज बनाने में मदद करती है। वस्तुत: शिक्षा अनवरत चलनेवाली सीखने की प्रक्रिया है। यह मनुष्य ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मनुष्यता के लिए आशा की किरण है। मनुष्य का व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन दोनों ही शिक्षा पर निर्भर होता है। वास्तव में शिक्षा हमारे जीवन से पूर्ण रूप से संलग्न प्रक्रिया है। शिक्षा संस्करण के 'शिक्ष्' शब्द से बना है उसी तरह से अंग्रेजी का एजुकेशन शब्द लैटिन भाषा के 'एजुकेशन' (Education) शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है 'अंदर से बाहर की ओर' अर्थात् बालक की अंतर्निहित शक्तियों का बाह्य आवरण में विकास। जाहिर है कि कोई भी बालक या वयस्क मानव समाज में ही शिक्षा ग्रहण करता है, इसके बाहर नहीं। शिक्षा पद के साथ ही शिक्षा के लिए विद्या = विद् उपादाने, जानना, ज्ञान प्राप्त करना एवं प्रबोध शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। प्रबोध को बुद्धि के माध्यम से प्रतिपादित ज्ञान के रूप में माना जाता है। प्राच्यकाल में विविध देशों में शिक्षा को विविध रूप से देखा जाता था, वहाँ की आवश्यकतानुसार ही शिक्षा के अर्थ को प्रस्तुत किया जाता था। प्राचीन युग में शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान की पर्यायवाची नहीं थी। जीविकोपार्जन का साधन भी नहीं थी। ''सा विद्या या विमुक्तये''[1] अर्थात् विद्या वह है, जो व्यक्ति को अज्ञान, ईर्ष्या, घृणा तथा संकीर्ण मनोवृत्तियों से विमुक्त करती है। अपितु शिक्षा को वह प्रकाश माना गया, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करके, उत्तम जीवन व्यतीत करने में, मोक्ष की प्राप्ति करने में सहायक हो। निस्संदेह यह एक महत्त्वपूर्ण पक्ष रहा है। शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य ज्ञान के आदान-प्रदान का एक साधन है। 'शिक्षा' निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। संपर्क, अनुभव एवं वातावरण से व्यक्ति प्रभावित रहता है। रामसकल पाण्डेय कहते हैं ''शिक्षा की प्रक्रिया जीवन भर अविकल रूप से चलती रहती है और जन्म से मृत्यु के बीच की अवधि में कोई भी शक्ति उसमें बाधक नहीं हो सकती।''[2] मानव समाज में किसी न किसी रूप में शिक्षा ग्रहण करता है। मानव में स्वयं को वास्तविकता के साथ अनुकूलित और समायोजित करने की क्षमता होती है। मनुष्य अनुकरणशील प्राणी है। डॉ. रामपाल सिंह कहते हैं कि ''शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है और सामाजिक पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने के योग्य बनाती है।''[3] भावात्मक एकता, सहयोग, सहानुभूति और करूणा जैसे सद्गुण पारिवारिक या सामाजिक जीवन में ही विकसित हो सकते हैं। जन-संपर्क से व्यक्ति में सामाजिकता आती है। भौतिक वातावरण मानव पर छाप डालता है। अर्थात् जीवन में आने वाले समस्त परिवर्तन शिक्षा की ही देन हैं। यूनेस्को के महासचिव श्री रेने माहू का परामर्श है ''शिक्षा को जीवन के निर्माण के एक साधन के रूप में नहीं समझना चाहिए बल्कि उसे जीवन के आयाम के रूप में समझा जाना चाहिए जो ज्ञान के निरंतर अर्जन और विचारों के सतत् पुनर्विचार से स्पष्ट है।''[4] शिक्षा सतत और सर्वव्यापी दोनों ही है। आजीवन शिक्षा जीवन की कुंजी है। समाज का विकास तथा सभ्यता के कारण मनुष्य की उपलब्धियाँ बढ़ने लगीं। लेखन की कला अवगत होने से अभिव्यक्ति का नया साधन निर्माण हो गया। ज्ञान को संचित रखना आसान हो गया। सभ्यता और विकास के इस नए उपक्रम में ज्ञान की अभिवृद्धि हो गई। परिवार और समाज में रहकर संचित ज्ञान को प्राप्त करना आसान तथा सरल कार्य नहीं था। इसी कारण शिक्षा को व्यवस्था के रूप में ढ़ालना जरूरी था। यह कार्य समाज के विभिन्न अंगों में ढ़ाला गया। नयी पीढ़ी को संचित ज्ञान देने के लिए पाठशाला, विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना हुई, जिसमें निश्चित व्यक्तियों द्वारा निश्चित समय पर शिक्षा देने का कार्य शुरू हुआ। आज स्कूल की चार दीवारी के भीतर दी जानेवाली शिक्षा को ही शिक्षा प्राप्त करना कहा जाता है। जब छात्र किसी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होकर पढ़ता है तब तक वह शिक्षा प्राप्त कर रहा होता है। इसी को शिक्षा कहा जाता है। विद्यालयों की शिक्षा विशिष्ट विषयों तक ही सीमित रहती है। आज की शिक्षा केवल ज्ञान बढ़ाने हेतु ही दी जाती है, जिससे समाज का शिक्षित प्रौढ़-वर्ग बनता जाए। अध्यापक ज्ञान-विज्ञान की विविध सामग्रियों की सहायता से पूर्ण निश्चित योजना के अनुरूप, पाठ्यक्रम, समय-सारणी, शिक्षा संगठन आदि की सहायता से एक निश्चित समय तक विद्यार्थियों पर प्रभाव डालते हैं और विद्यार्थी उन्हीं प्रभावों को ग्रहण करते हैं। अर्थात् शिक्षकों से विभिन्न विषय पढ़ना, पुस्तकें पढ़ना, एक विशिष्ट स्थान में, विशिष्ट अवधि में पढ़ना इसी संकुचित अर्थ में आज की

Scanned by CamScanner

शिक्षा को लिया जाता है। शिक्षा शब्द से बहुअर्थ निकलते हैं, उतनी ही व्याख्याएँ भी स्पष्ट होती हैं। वास्तव में शिक्षा केवल जानना या समझना नहीं बल्कि उसे धारण करना है। शिक्षा को किसी बंद रूप से सीखा नहीं जाता है। शिक्षा गतिशील प्रक्रिया है। वह मानव को विकास के पथ पर लाती है। शिक्षा एक प्रक्रिया के रूप में ही है, जो मनुष्य में नैतिक चरित्र और मुक्त विचार से समाजपयोगी चरम विकास में सहायक होती है।

शिक्षा का प्रथम उद्देश्य बच्चों को एक परिपक्व इन्सान बनाना होता है, ताकि वह कल्पनाशील, वैचारिक रूप से स्वतंत्र और देश का भावी कर्णधार बन सके। सबसे पहले तो यही कि अंगुठा छाप लोग यह निर्धार करते हैं कि बच्चों को क्या पढ़ना चाहिए, जो कुछ शिक्षाविद् हैं वो अपने दायरे और विचारधाराओं से बंधे हैं, उनसे निकलने या कुछ नया सोचने से डरते हैं। शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य व्यक्ति को समाज के अनुरूप बनाना है। ये हमें एक परिपक्व समाज बनाने में मदद करता है, यदि शिक्षा के उद्देश्य सही दिशा में हो तो यह इन्सान को नए-नए प्रयोग करने के लिए उत्साहित करते हैं। शिक्षा और संस्कार साथ-साथ चलते हैं। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सुसंस्कृत तथा सभ्य बनाना है; जो व्यक्ति साहित्य, संगीत, कला आदि का प्रेमी है, वही सभ्य और सुसंस्कृत समझा जाता है। इसीलिए सांस्कृतिक उद्देश्य को शिक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। ज्ञान द्वारा शक्ति मिलती है, परंतु संस्कृति विवेक पैदा करती है। शिक्षा जिस मुकाम पर पहुँच चुकी है वहाँ उसमें अमुलाग्र परिवर्तन की गुंजाइश है। आज हमें मिल बैठकर सोचना चाहिए कि यदि शिक्षा हमारे उद्देश्यों को पूरा नहीं करती, तो ऐसी शिक्षा कोई मतलब नहीं है। आज जब भगुवाधारी अपना एजेण्डा चला रहे हैं, दूसरी तरफ से धर्मनिरपेक्षवाले अपना कांग्रेसी एजेण्डा और तीसरी तरफ मदरसों द्वारा शिक्षा का इस्लामीकरण तो हम कैसे समाज का निर्माण कर रहे हैं, हम लोगों को लोगों से दूर कर रहे हैं। इस शिक्षा व्यवस्था को बदलने हेतु कुछ सुझाव आवश्यक हैं। शिक्षा को ना केवल किताबी ज्ञान बल्कि व्यावहारिक रूप प्रदान करना चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के योग्य तथा समाज में रहने योग्य बना सके। व्यक्ति समाज में रहकर ही अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करें। शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य व्यक्ति को समाज के अनुरूप बनाना है। ऐसी शिक्षा व्यक्ति का समाजिकीकरण करती है, उसमें नागरिकता के गुण उत्पन्न करती है। आधुनिक काल में जीविकोपार्जन को शिक्षा का विशिष्ट उद्देश्य स्वीकार किया है। इस युग में आर्थिक संपन्नता प्राप्त करके व्यक्ति समाज में सम्मान अर्जित करता है। मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। यदि शिक्षा इनको देने में असफल है तो उसका उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। आधुनिक युग में औद्योगिकीकरण ने शिक्षा के व्यावसायिक उद्देश्य को सबसे अधिक श्रेष्ठ माना है। इस उद्देश्य पूर्ति के कारण मानव की जीविका की समस्या हल होती है तथा वह आत्मनिर्भर बनता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति नवीन ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। भारतवासियों की पुरानी मान्यताएँ, विचार, अंधश्रद्धा, कूपमंडूकता, अवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का अंत करने के लिए शिक्षा की जरूरत है। भारतीय शिक्षा पद्धति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को अपना मुख्य उद्देश्य बनाना चाहिए, ताकि व्यक्ति तथा देश का भविष्य उज्ज्वल होने में सफलता मिल सकेगी। व्यक्ति के जीवनयापन में सहायक सिद्ध होने वाली शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है। लेकिन आज हम भारत की शिक्षा या उच्च शिक्षा की बात करते हैं तो उसके सामने बहुत-सी चुनौतियाँ विकराल रूप धारण कर बैठी है; जो निम्नलिखित हैं-

1) सामाजिक चुनौतियाँ :

- भ्रष्टाचार
- सामाजिक एवं राजनीति लोगों का हस्तक्षेप
- संकीर्ण विचार
- नैतिक मूल्यों में गिरावट
- नकारात्मक सोच एवं उदासीनता

2) आर्थिक चुनौतियाँ :

- बेरोजगारी
- शिक्षा का व्यावसायीकरण
- सपोर्ट सर्विस का अभाव

3) तकनीकी चुनौतियाँ :

- तकनीकी साधनों का अभाव
- प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी
- वर्चुअल क्लासरूम का अभाव
- मशीनी शिक्षा का बढ़ता क्रेज

4) अन्य चुनौतियाँ:

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव

Scanned by CamScanner

- संशोधनात्मक दृष्टि का अभाव
- पाठ्यक्रम की अनुपयोगिता
- छात्रों की घटती संख्या
- परीक्षा एवं मूल्यांकन की प्रचलित प्रणाली

5) सांस्कृतिक चुनौतियाँ:

6) प्राकृतिक चुनौतियाँ :

अब इन चुनौतियों का विस्तार से विवेचन-विश्लेषण करेंगे।

1) सामाजिक चुनौतियाँ (Social Challenges):

- **भ्रष्टाचार (Corruption) :**

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार की जड़ें पनप गई हैं। आज शिक्षा क्षेत्र एक बाजार बन गया है। इस बाजार में बहुत लोग अपना पैसा इन्वेस्ट कर रहे हैं। इस क्षेत्र में सिफारिश, जानकारी, पहचान और पहुँच है तो आपकी नियुक्ति तय है। आज नौकरी के लिए कठपुतले बनकर छात्र उनकी हर शर्त का पालन करते हैं। आपकी योग्यता आपकी चाटुकारिता ही है। शिक्षा के क्षेत्र का वातावरण दूषित, अशांति, अराजकतापूर्ण बना हुआ है। यही व्यक्ति छात्रों को गुमराह तथा उकसाने का कार्य करते हैं। प्रशासनिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार की जड़े मजबूत हो गई है।

- **सामाजिक एवं राजनीति लोगों का हस्तक्षेप (Political Interference):**

सामाजिक संगठन के प्रतिनिधि एवं राजनीतिक अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग कर शिक्षा क्षेत्र में हस्तक्षेप करते हैं। वे अयोग्य अध्यापक को योग्य साबित करने में ही नहीं बल्कि नजदीकी छात्रों को प्रवेश दिलाने में कॉलेज-विश्वविद्यालयों में हस्तक्षेप करते हैं। यहाँ तक कि बात नहीं मानने पर धमकाते भी हैं। राजनीति से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। राजनीति ने शिक्षा क्षेत्र को ऐसा डसा है कि उसके सभी मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। सभी मूल्य एवं मान्यताएँ राजनीति के 'मेन होल' में जा गिरी है। वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था भारतीय शिक्षा को गलत दिशा की ओर ले जा रही है।

- **संकीर्ण सोच (Narrow Minded):**

अभिभावक के विचारों की संकीर्णता से भारतीय जनमानस (विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र) अभी भी मुक्त नहीं हुआ है। लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त कर अथवा संस्थाओं में जाकर उच्छृंखल हो जाती हैं। यदि किसी कारण वे शिक्षण संस्थाओं में नामांकन करा भी लेते हैं तो एक या दो वर्ष पश्चात् पढ़ाई अधूरी छोड़ देती हैं जो कि अपव्यय का एक कारण है।

- **नैतिक मूल्यों में गिरावट (Lack of Moral Values in Edu.):**

आज अध्यापक पाठ्यक्रम पूरा करने के चक्कर में नैतिक मूल्यों को पिरोनों में अनदेखी होती है। वर्तमान सोशल मीडिया के कारण छात्र-छात्राओं में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। सोशल मीडिया के दुरुपयोग से छात्र अश्लील वृत्तियों के प्रति आदी हो चुके हैं। युवा पीढ़ी व्यसन की लत से अच्छे-बुरे का खयाल नहीं करती, परिणामस्वरूप दुष्कर्मों में इजाफा हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से युवा पीढ़ी पतन की राह पर अग्रेसर है। ऐसी स्थिति में हमारी शिक्षा नैतिक मूल्यों के पाठ पढ़ाने में असमर्थ दिखाई देती है।

- **नकारात्मक सोच एवं उदासीनता (Negitave though aur Ingorence):**

अशिक्षित अभिभावक अपने बेटे की शिक्षा के प्रति उदासीन और नकारात्मक दिखाई देते हैं। वे खुद शिक्षा का महत्व नहीं जानते। इसी कारण वे अपने बेटे को कॉलेज भेजने के बजाय अपने घर के काम में हाथ बाँटने के लिए मजबूर कर देते हैं। समाज में कई छात्र आधी-अधूरी पढ़ाई करते हैं और कहीं पर छोटा-बड़ा व्यवसाय या काम करना शुरू करते हैं, जिससे वह आय का सोत बन जाता है। परिणामस्वरूप लोगों का पढ़ाई की ओर देखना का नजरिया बदल जाता है। कई छात्र-छात्राओं की शादी कम उम्र में ही की जाती है। दंपती जीवन का भार कम उम्र में ही उन पर पड़ने से पढ़ाई की ओर ध्यान देना संभव नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप वे परीक्षा में असफल हो जाते हैं और शिक्षा के प्रति देखने का उनका नजरिया नकारात्मक एवं उदासीन हो जाता है।

2) आर्थिक चुनौतियाँ (Economical Challenges):

भारत की आर्थिक व्यवस्था बहुत ही शोचनीय है। देश में आर्थिक विषमता अधिक है। यहाँ लोग बड़ी कठिनाई से अपनी आजीविका चलाते हैं। इस स्थिति में बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु महाविद्यालय भेजना मुश्किल कार्य है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियाँ घर और लड़के मजदूरी के काम में जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में कॉलेजों में विद्यार्थियों का आना-जाना अनियमित हो जाता है। फलस्वरूप वे परीक्षा में असफल होते हैं। आर्थिक आभाव के कारण वे पुस्तकें नहीं खरीद पाते जो कि उच्च शिक्षा की एक गंभीर समस्या है।

- **शिक्षित बेरोजगार (Educated Unemployment):**

आज शिक्षा क्षेत्र में बेरोजगारी का खतरा मंडरा रहा है। स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालय तक शिक्षा संस्थाओं की संख्या में बढोत्तरी हो रही है। शिक्षित बेरोजगारों की आबादी बढ़ती ही जा रही है। आज पाठ्यक्रमों से लेकर परीक्षा पद्धति तक परंपरागत शिक्षा पद्धति का आयोजन किया जाता है। भारत में छात्रों की योग्यता तथा प्रतिभा को न पहचानते हुए विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था का आयोजन

Scanned by CamScanner

नहीं किया जाता है। छात्रों की शिक्षा सिर्फ उपाधि प्राप्त करने तक सीमित है। उपाधि प्राप्त किए हुए छात्र आज नौकरी के सिलसिले में दर-दर भटकते हुए नजर आते हैं। अपने-अपने भविष्य के लिए चिंतित दिखाई देते हैं। अपनी आजीविका के साधन के लिए हमेशा से प्रयास में जुटे रहते हैं। सरकार तथा शिक्षा संस्थानों के प्रति हमेशा से ही आक्रोश व्यक्त करते हुए नजर आते हैं। छात्रों के व्यक्तित्व को समग्र रूप से विकसित करने और उनमें समन्वय, निर्णय क्षमता, आत्मबोध की शक्ति पैदा करने के दायित्व से आज की शिक्षा अछूती रही है। आज का युवक शिक्षण संस्थाओं के प्रति विद्रोह कर रहा है। शिक्षा में तकनीकी शिक्षा अनिवार्य है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन लाना जरूरी है। छात्रों को आत्मनिर्भर शिक्षा का ज्ञान दिलाना बहुत ही जरूरी है। आज बेरोजगारी की समस्या भयावह बन गयी है, जिससे छात्रों में निराशाजनक स्थिति पैदा हो गई है।

➢ **शिक्षा का व्यवसायीकरण (Education as Buisness):**

जहाँ शिक्षा-व्यवस्था में स्वतंत्रता के बाद पिछले सालों में एक ओर महत्त्वपूर्ण क्रांति हुई है वहीं दूसरी ओर चुनौतियाँ भी बढ़ती जा रही हैं, जिन पर विचार करना आवश्यक है। पिछले कुछ सालों में इतनी तीव्र गति से व्यावसायिक स्कूल-कॉलेजों की वृद्धि हुई है कि जिनकी गिनती करना कठिन है। इन शिक्षण संस्थाओं द्वारा शिक्षा के सभी सिद्धांतों और मान्यताओं की अवहेलना की जाती है। "सरकार के प्रयत्नों और समाज के सहयोग से इस शिक्षा रूपी व्यवसाय पर अंकुश लगाया जा सकता है जिससे शिक्षा जैसे पवित्र काम को धंधे के रूप में न अपनाया जा सके।"[5] शिक्षा-व्यवस्था में सुधार के लिए सभी शिक्षा नीतियों में प्रचार किया जाता रहा है, लेकिन इसके बावजूद स्थिति वैसी की वैसी बनी हुई है। शिक्षा स्तर में सुधार लाने के लिए मुख्य रूप से शिक्षा-संस्थाओं को साधन-संपन्न बनाना आवश्यक है। कुछ योजनाओं में इस दिशा में जो प्रयास किए गए, वे अनुकूल नहीं रहें। यही कारण है सरकारी स्कूलों पर व्यावसायिक स्कूल हावी होते चले गए। नई-नई शैक्षिक संस्थाएँ विद्यार्थियों को उचित शैक्षिक वातावरण नहीं दे सकीं। यदि सरकारी महाविद्यालयों की आवश्यकता समाज की अपेक्षाओं के अनुसार पूर्ण हो तो निश्चित रूप से शिक्षा स्तर ऊँचा उठेगा।

➢ **सपोर्ट सर्विस का अभाव (Lack of Support Service):**

कुछ निजी कॉलेजों में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस), नेशनल कैडेट कोर्स (एनसीसी), सांस्कृतिक विभाग, काउंसलिंग सर्विस, प्लेसमेंट सेल, लाइब्रेरी जैसी सपोर्ट सर्विस का कुछ मात्रा में अभाव पाया जाता है। यही कारण है कि छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान नहीं मिलता। उन्हें नौकरी नहीं मिलती। काउंसलिंग के अभाव में छात्रों को उचित दिशा नहीं मिलती। पारिवारिक समस्याओं का निपटारा नहीं होने की वजह से छात्र उससे बाहर नहीं आते। यही वजह है कि पढ़ाई की ओर उनका ध्यान नहीं जाता। कभी-कभार घर का माहौल अच्छा नहीं होता। खुद माता-पिता समस्याग्रस्त होते हैं; जिसके कारण घर में शैक्षिक माहौल नहीं बनता। खुद समस्याग्रस्त छात्र पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं दे पाता।

3) तकनीकी चुनौतियाँ (Technical Challenges):

➢ **तकनीकी साधनों का अभाव (Lack of Technical Instrument):**

उच्च शिक्षा में संसाधनों की कमी हर कॉलेज एवं विश्वविद्यालय में पाई जाती है। वर्तमान में शिक्षा पर बहुत कम खर्च किया जाता है। आज भी कई कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों में भवन, प्रयोगशाला, उपकरण, पुस्तकालय, संगणक, प्रोजेक्टर आदि के लिए पर्याप्त धन नहीं मिलता, जिसका कारण विश्वविद्यालयों एवं विद्यालयों का निजीकरण है।

➢ **प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी (Lack of Trend Teacher):**

आज कई विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में पद मान्य अध्यापकों की संख्या कम है और रिक्त पद ज्यादा है। उनके स्थान पर क्लॉक अवर बेसिस (सीएचबी) पर अध्यापकों की नियुक्ति की जा रही है। उसका सीधा असर अध्यापन पर होता है। सरकारी व्यवस्था अध्यापक के रिक्त पदों की भर्ती संबंधी उदासीनता रवैया अपना रही है, जिसके कारण आज विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में भारी मात्रा में अध्यापकों की कमी पाई जाती है। अतिथि प्राध्यापक की संकल्पना विकसित कर जैसे-तैसे पाठ्यक्रम पूरे करवाए जाते हैं, जिससे छात्रों को उपाधि तो मिलती है, लेकिन ज्ञान नहीं मिलता। तदर्थ अध्यापकों की एक अलग ही समस्या है। कम्प्यूटर प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी दिखाई देती है, जिसके कारण छात्रों को तकनीक पर आधारित ज्ञान का लाभ नहीं मिलता।

➢ **वर्चुअल क्लासरूम का अभाव (Lack of Virtual Classroom):**

कई विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में इन्फ्रास्ट्रक्चर और वर्चुअल क्लासरूम का अभाव पाया जाता है। प्राइवेट कॉलेजों की स्थिति उनके संचालक के अनुसार तय होती है। उनके ऊपर इन संसाधनों की पूर्ति निर्भर करती है। ग्रामीण, पहाड़ी तथा आदिवासी इलाकों में बिजली और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों (कम्प्यूटर, इंटरनेट) की कमी के कारण वर्चुअल क्लासरूम के माध्यम से अध्यापन नहीं हो पाता। जिनके पास इंटरनेट और कम्प्यूटर की सुविधाएँ है, वे छात्र अध्यापन के वाटस एप, फेसबुक, आर्कुट, हैंगआऊट, इंस्टाग्राम जैसी सोशल नेटवर्किंग के आदी हो चुके है। यह बहुत बड़ा अंतरविरोध है।

➢ **मशीनी शिक्षा का बढ़ता क्रेज :**

शिक्षा प्राप्ति के लिए आज हमारे पास ई-पाठशाला, गूगल क्लासरूम, मूडल क्लासरूम, यू ट्यूब, प्रेजेंटेशन ट्यूब जैसी इंटरनेट आधारित मशीनी शिक्षा मौजूद है। ये मशीनी शिक्षक सूचना दे सकते हैं, लेकिन ज्ञान नहीं। इससे मानवीय मूल्यों का ऱ्हास होगा।

Scanned by CamScanner

मशीन शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति तो जरूर कर सकती है, लेकिन अच्छे संस्कार नहीं दे पाएगी। इन दिनों इंटरनेट के उपयोग में मशीनी शिक्षा का क्रेज बढ़ता जा रहा है। इसलिए ये इलेक्ट्रॉनिक माध्यम सपोर्ट के रूप में इस्तेमाल किए, तो शिक्षा का स्तर निश्चित ही बढ़ सकता है।

4) अन्य चुनौतियाँ (Other Challenges):

➢ **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव (Lack of Quality Education):**

हमारी शिक्षा का शैक्षिक स्तर गिरता जा रहा है। शिक्षा के नाम पर हम विद्यार्थियों को ज्ञान नहीं देते और न व्यावहारिक शिक्षा देते हैं। अनुपयोगी पाठ्यक्रम के कारण हम युवा पीढ़ी को बेरोजगारों की खाई में ढकेल रहे हैं। कहा जा रहा है कि विदेशी विश्वविद्यालयों को देश में आने और पैर पसारने की अनुमति देने से शिक्षा-व्यवस्था के स्तर में कुछ सुधार हो जाए। यदि ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु कोई विदेशी विश्वविद्यालय भारत आना चाहता है तो उसका नाम ही विश्वविद्यालय है। लेकिन यदि इसका मकसद महज मुनाफा कमाना है तो फिर यह न सिर्फ अशुभ संकेत हैं, बल्कि घोर आपत्तिजनक भी है।

➢ **अन्वेषणात्मक दृष्टि का अभाव (Lack of Research):**

भारत में जब उच्च शिक्षा की शुरुआत हुई तब टिचिंग पर ज्यादा ध्यान दिया गया और रिसर्च को बहुत कम महत्व दिया गया। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि भारतीय समाज में शोधार्थी को ज्यादा सम्मान नहीं दिया जाता। इसकी तुलना में अमेरिका में शोध की कद्र हुआ करती है। यही कारण है कि वहाँ नोबेलों की भरमार नजर आती है। विज्ञान एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में एक तिहाई शोध अमेरिका में होते हैं, जबकि भारत में केवल तीन प्रतिशत होते हैं। शोध के नाम पर कॉपी पेस्ट का मामला बढ़ गया है और कॉपीराइट कानून उल्लंघन के मामले सामने आ रहे हैं।

➢ **पाठ्यक्रम की अनुपयोगिता (Unpragmatic Syllabus):**

आज की शिक्षा पद्धति में सुधार करना जरूरी है। पुरानी मान्यताएँ, विचारधाराओं एवं घटनाक्रमों को पाठ्यक्रम से हटाना होगा। उसके स्थान पर नए मापदंड, मूल्यों व ज्ञान से संबंधित विचारधाराओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना होगा, तभी हमारे विद्यार्थी ज्ञान में हो रहे विकास के साथ तालमेल स्थापित कर पाएंगे। हमारा पाठ्यक्रम संकुचित, एकांगी, अव्यावहारिक तथा अरुचिकर है। पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रम में विषयों की जटिलता अधिक और व्यावहारिकता कम है। शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बौद्धिक एवं मानसिक विकास नहीं, बल्कि छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक, भावात्मक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक, चारित्रिक और शारीरिक विकास भी होता है। इतना ही नहीं, उनमें इन मूल्यों के संगठन की भी आवश्यकता है, ताकि वे अपने जीवन से संबंधित बुनियादी समस्याओं का सरलता से समाधान कर सकें। रुचि, गुण और आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य-निर्धारण हेतु पाठ्यक्रम को सरल, जीवन से संबंद्ध और उपयोगी बनाया जाना चाहिए। अत: यह आवश्यक है कि हमारा पाठ्यक्रम ऐसा हो, जिससे हम अपनी आजीविका के लिए अपने आपको सुरक्षित बना सके।

➢ **छात्रों की घटती संख्या (Less Student Attendance):**

आज कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों में छात्रों की संख्या दिनोंदिन कम होती जा रही है। कुछ कॉलेजों में छात्रों की संख्या बढ़ती जा रही है तो कुछ कॉलेजों में फर्जी छात्रों का फर्जीवाड़ा सामने आ रहा है। कुछ छात्र पारिवारिक समस्या और आर्थिक समस्या के कारण भी कक्षा में नहीं आते। महाराष्ट्र सरकार द्वारा हाईस्कूल की छात्र गिनती में कई स्कूल सरकार को बंद करवाने पड़े, जो कागज पर दीवार बने हुए थे।

➢ **परीक्षा एवं मूल्यांकन की प्रचलित प्रणाली (Traditional Examantion System):**

उच्च शिक्षा में निहित परीक्षा प्रचलित एवं दोषपूर्ण है। वर्तमान संदर्भ में यह स्पष्ट है कि शिक्षा ज्ञान और व्यावहारिकता पर आधारित न होकर स्मरण-प्रविधि पर ही आधारित है, जबकि उच्च शिक्षा इस विधि से ऊपर उठकर समझ, कौशल और अनुप्रयोग पर आधारित होनी चाहिए। आज भी हम उसी पुरानी मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रयोग करते आ रहे हैं, जो कि अविश्वसनीय हैं। छात्रों की संपूर्ण बौद्धिक मानसिकता को समझने में हमारी मूल्यांकन प्रणाली असमर्थ-सी प्रतीत होती है।

5) सांस्कृतिक चुनौती (Cultural Challenges):

हमारा भारतीय अध्यापन प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा पर निर्भर करती है। आज की युवा पीढ़ी इस परंपरा को छेद दे रही है। छात्रों को व्यसन की लत होने की वजह से वे अपने ही नशे में धुत्त रहते हैं। सिगार फूंकना, शराब पीना, तम्बाकू खाना जैसे व्यसनों के आदी छात्र कक्षा में नहीं आते। यदि आते भी है तो उनका ध्यान पढ़ाई की ओर नहीं होता। वे छात्र अपने गुरु की इज्जत नहीं करते। इसलिए अध्यापक उनकी ओर ध्यान नहीं देते। वे अपनी सांस्कृतिक परंपरा निर्वाह नहीं करते।

6) प्राकृतिक चुनौतियाँ (Natural Challenges) :

भारत देश की भौगोलिक परिस्थिति विषम है। छात्रों की महाविद्यालय में अनियमित उपस्थिति और फिर उनके कारण वार्षिक परीक्षा में असफल होने के लिए बाध्य करती हैं। छात्रों को कहीं-कहीं पहाड़, नदी, नाला और झील जैसी प्राकृतिक अवरोधों को पारकर

Scanned by CamScanner

स्कूल-कॉलेजों में जाना पड़ता है। बहुत से महाविद्यालय जन-जीवन से बहुत दूर-दूर पर बने होते हैं। हिमांचल प्रदेश, कश्मीर, गढ़वाल या बिहार के पर्वतीय स्थानों में आवागमन के साधनों के अभाव पाए जाते हैं। उम्मीद हैं कि इक्कीसवीं शताब्दी में सरकार और जन-सहयोग की सक्रियता से इन प्राकृतिक कठिनाइयों से मुक्ति मिलेगी।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि शिक्षा वह संजीवनी है, जो अज्ञानरूपी मरूस्थल में भी ज्ञान की गंगा लहराती है। वस्तुत: परिस्थियों को समझने-बूझने, उनका विश्लेषण करने और उनसे निजात पाने की कला का नाम है-शिक्षा। शिक्षा हमारे सर्वांगिण विकास का हेतु है। उच्च शिक्षा में ऐसी गुंजाइश होनी चाहिए कि व्यक्ति का सामाजिक और सांस्कृतिक जुड़ाव बेहद सक्रिय और ऊर्जा से परिपूर्ण हो। उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में संवेदन, तर्किक शक्ति, दृष्टिबोध, रससृष्टि और विवेचन की क्षमता बढ़ाने की कोशिश होनी चाहिए। समाज को भी चाहिए कि ऐसे विषयों के प्रति उदासीनता न बरते तथा कैरियर के साथ-साथ इन्हें भी समान महत्व दे, ताकि समाज और व्यक्ति के संबंध और सुदृढ़ हों और व्यक्ति का मानसिक विकास संभव हो। इस अर्थ में संवेदना भी बढ़े। उच्चा शिक्षा मानव जीवन को परिपूर्णता की ओर ले जाने में मदद करती है। उच्च शिक्षा में शिक्षा प्रविधि को नवाचारी बने रहना आवश्यक है। उच्च शिक्षा में नवदृष्टिबोध उसे प्रासंगिक और औचित्यपूर्ण बनाता है। शिक्षा बाजार नहीं है अपितु मानव मन को तैयार करने का उदात्ता सांचा है। जितना जल्दी इस तथ्य को समझेंगे उतना ही शिक्षा क्षेत्र का भला होगा।

➢ **संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1. डॉ. शंकर दयाल शर्मा, भारतीयता के आधार, (दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन : प्र. सं.1998) पृ. 47
2. डॉ. शालिग्राम त्रिपाठी, शैक्षिक मनोविज्ञान, (दिल्ली, वेंकटेश प्रकाशन: प्र. सं. 1973) पृ. 2
3. डॉ. रामपाल सिंह, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, (आगरा, पुस्तक प्रकाशन : प्र.सं. 1981) पृ. 4
4. बीर सिंह, '1970 से 1979 तक की अवधि में शिक्षा', शिक्षा विवेचन, कृष्ण गोपाल, संपा. (दिल्ली, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार: अप्रैल 1973) पृ.1
5. जगतराम आर्य, शिक्षा लक्ष्य और सिद्धांत, (नयी दिल्ली, जगतराम एण्ड सन्स : प्र.सं. 2005) पृ.96

*****

Scanned by CamScanner